अवध की कला एवं इतिहास

अवध का मानचित्र

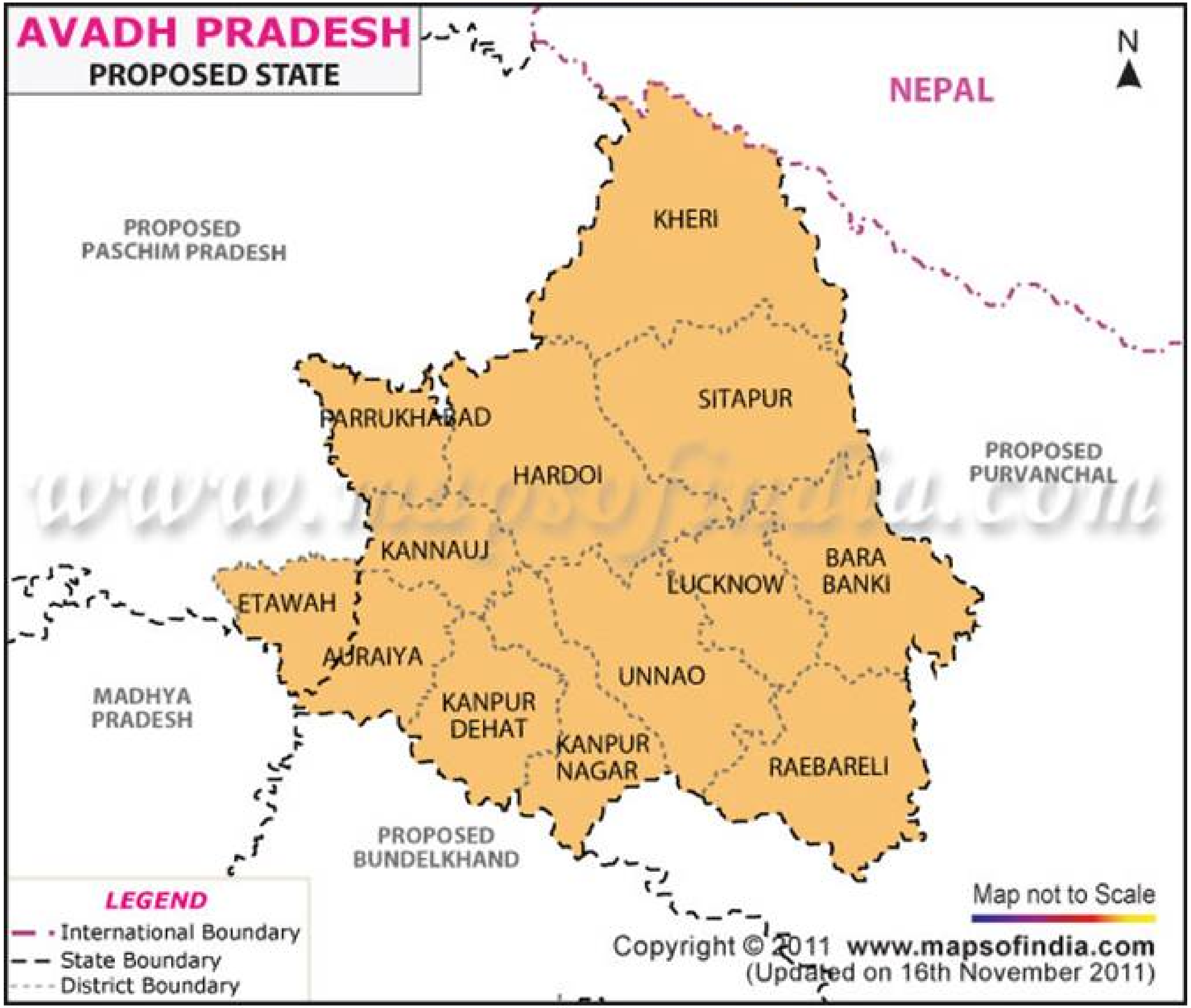
AVADH PRADESH
PROPOSED STATE
NEPAL
N
PROPOSED
PASCHIM PRADESH
KHERI
SITAPUR
FARRUKHABAD
HARDOI
PROPOSED
PURVANCHAL
KANNAUJ
ETAWAH
LUCKNOW
BARA
BANKI
AURAIYA
UNNAO
MADHYA
PRADESH
KANPUR
DEHAT
KANPUR
NAGAR
RAEBARELI
PROPOSED
BUNDELKHAND
LEGEND
International Boundary
State Boundary
District Boundary
Map not to Scale
Copyright © 2011 www.mapsofindia.com
(Updated on 16th November 2011)

उत्तर प्रदेश का मानचित्र

अवध वर्तमान उत्तर प्रदेश के एक भाग का नाम है जो प्राचीन काल में कोशल कहलाता था। इसकी राजधानी "अयोध्या" थी। अवध शब्द अयोध्या से ही निकला है। अवध की राजधानी प्रारम्भ में "अयोध्या" थी किन्तु बाद में लखनऊ आई थी। अवध पर नवाबों का आधिपत्य था जो प्रायः स्वतंत्र थे। चूंकि अवध के नवाब शिया मुसलमान थे अतः अवध में इसलाम के इस संप्रदाय को विशेष संरक्षण मिला। उर्दू कविता का भी प्रसिद्ध केंद्र रहा। दिल्ली केंद्र के नष्ट होने पर बहुत से दिल्ली के भी प्रसिद्ध उर्दू कवि लखनऊ वापस चले आए थे। अवध की पारम्परिक राजधानी लखनऊ है।भौगोलिक रूप से अवध की आधुनिक परिभाषा,लखनऊ, सुल्तानपुर, रायबरेली, उन्नाव, कानपुर, भदोही, प्रयागराज, बाराबंकी,अयोध्या, अम्बेडकर नगर, प्रतापगढ , बहराइच, बलरामपुर, गोंडा, हरदोई, लखीमपुर खीरी, कौशाम्बी, सीतापुर, श्रावस्ती उन्नाव, फतेहपुर, कानपुर, (जौनपुर, और मिर्जापुर के पश्चिमी हिस्सों), कन्नौज, पीलीभीत, शाहजहांपुर से बनती है। प्राचीन काल में आवध की राजधानी "अयोध्या" थीं।

अवध की चित्रकला

अवध की चित्रकला का भारतीय चित्रकारी जगत में विशेष स्थान रहा है, जिसमें हिन्दू मुस्लिम दोनों की सहभागिता देखने को मिलती है। अवध चित्रकला में फारसी मुगल हिन्दू और यूरोपीय चित्रकला का संयुक्त प्रभाव देखने को मिलता है, यह दो शैलियों में विकसित हुयी, प्रथम चरण (1750-1800) में इसमें मुगल और राजपूत परंपराओं को चित्रित किया गया था, द्वीतीय चरण में इसमें यूरोपीय चित्रकला का प्रभाव देखने को मिलता है, इसकी नींव अवध के नवाब शुजा-उद-दौला द्वारा रखी गयी। अवध के नवाब आसफ-उद-दौला का चित्रों से विशेष लगाव था। इनके द्वारा चित्रकारों को पुरस्कृत किया जाता था तथा इनके पास मुगल चित्रों का एक दुर्लभ संग्रह था। अवध के अन्य नवाब जैसे-सफदरजंग, को भी चित्रकारी से प्रेम था इनके द्वारा भी मुगल काल के चित्रों का विस्तृत संग्रह किया गया।

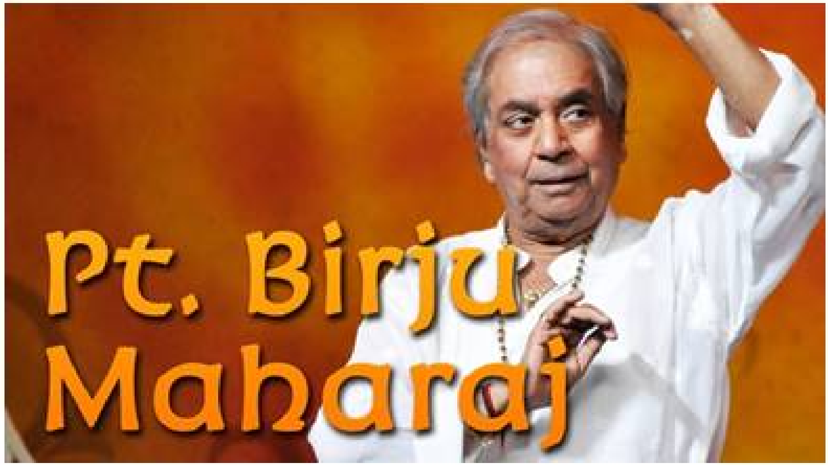

ये शास्त्रीय कथक नृत्य के लखनऊ कालिका-बिन्दादिन घराने के अग्रणी नर्तक हैं। पंडित जी कथक नर्तकों के महाराज परिवार के वंशज हैं जिसमें अन्य प्रमुख विभूतियों में इनके दो चाचा व ताऊ, शंभु महाराज एवं लच्छू महाराज; तथा इनके स्वयं के पिता एवं गुरु अच्छन महाराज भी आते हैं। बिरजू महाराज का जन्म कत्थक नृत्य के लिये प्रसिद्ध जगन्नाथ महाराज के घर हुआ था, जिन्हें लखनऊ घराने के अच्छन महाराज कहा जाता था। ये रायगढ़ रजवाड़े में दरबारी नर्तक हुआ करते थे। बिरजू महाराज को अपने क्षेत्र में आरम्भ से ही काफ़ी प्रशंसा एवं सम्मान मिले, जिनमें १९८६ में पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा कालिदास सम्मान प्रमुख हैं। इनके साथ ही इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि मानद मिली।

२०१६ में हिन्दी फ़िल्म बाजीराव मस्तानी में "मोहे रंग दो लाल " गाने पर नृत्य-निर्देशन के लिये फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार मिला।

२००२ में लता मंगेश्कर पुरस्कार।

भरत मुनि सम्मान २०१२ मे सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशन हेतु राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार: फिल्म विश्वरूपम के लिये।[

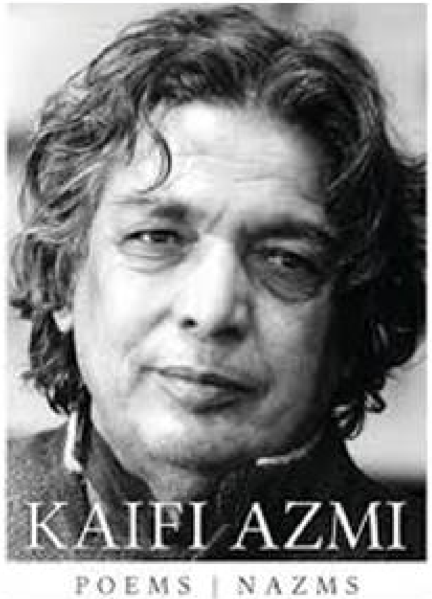

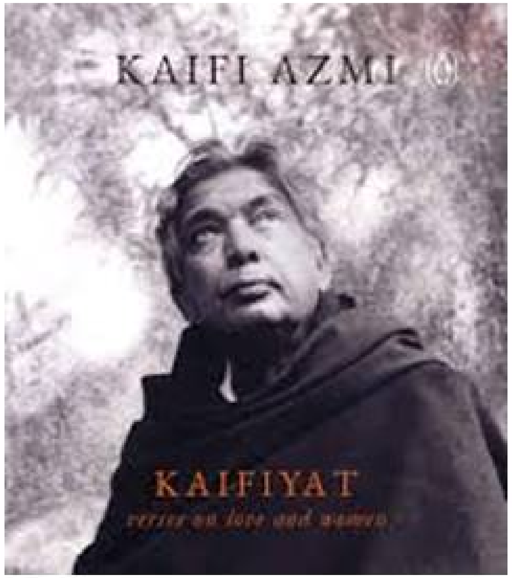

कैफी आज़मी का असली नाम अख्तर हुसैन रिजवी था। उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के छोटे से गांव मिजवां में 14 जनवरी 1919 में जन्मे गांव के भोलेभाले माहौल में कविताएं पढ़ने का शौक लगा। भाइयों ने प्रोत्साहित किया तो खुद भी लिखने लगे। 11 साल की उम्र में उन्होंने अपनी पहली गज़ल लिखी। किशोर होते-होते मुशायरे में शामिल होने लगे। वर्ष 1936 में साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित हुए और सदस्यता ग्रहण कर ली। धार्मिक रूढ़िवादिता से परेशान कैफी को इस विचारधारा में जैसे सारी समस्याओं का हल मिल गया। उन्होंने निश्चय किया कि सामाजिक संदेश के लिए ही लेखनी का उपयोग करेंगे। क़ैफ़ी आज़मी को राष्ट्रीय पुरस्कार के अलावा कई बार फिल्मफेयर अवॉर्ड भी मिला। 1974 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया।

मालिनी अवस्थी एक भारतीय लोक गायिका हैं। वह हिन्दी भाषा की बोलियों जैसे अवधी, बुंदेली भाषा और भोजपुरी में गाती हैं। वह ठुमरी और कजरी में भी प्रस्तुत करती हैं। भारत सरकार ने उन्हें नागरिक सम्मान पद्म श्री से 2016 में सम्मानित किया। मालिनी अवस्थी कन्नौज, उत्तर प्रदेश में पैदा हुई थी। भातखंडे संगीत संस्थान लखनऊ से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। वह बनारस की पौराणिक हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायका, गिरिजा देवी जी की एक गंडा बांध शिष्य हैं।

बेग़म अख्तर के नाम से प्रसिद्ध, अख्तरी बाई फ़ैज़ाबादी (७ अक्टूबर १९१४- ३० अक्टूबर १९७४) भारत की प्रसिद्ध गायिका थीं, जिन्हें दादरा, ठुमरी व ग़ज़ल में महारत हासिल थी। उन्हें कला के क्षेत्र में भारत सरकार पहले पद्म श्री तथा सन १९७५ में मरणोपरांत पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उन्हें "मल्लिका-ए-ग़ज़ल" के खिताब से नवाज़ा गया था।२०१४ की फिल्म डेढ़ इश्किया में विशाल भारद्वाज ने बेगम अख्तर की प्रसिद्ध ठुमरी हमरी अटरिया पे का आधुनिक रीमिक्स रेखा भारद्वाज की आवाज में प्रस्तुत किया।अख्तर बाई फैजाबाद, जिसे बेगम अख्तर के नाम से भी जाना जाता है, गजल, दादरा और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ठुमरी शैलियों के एक प्रसिद्ध भारतीय गायक थे। उन्होंने मुखर संगीत के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया, और उन्हें सरकार द्वारा पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। भारत की। उन्हें "मल्लिका-ए-गझल" का खिताब दिया गया था।

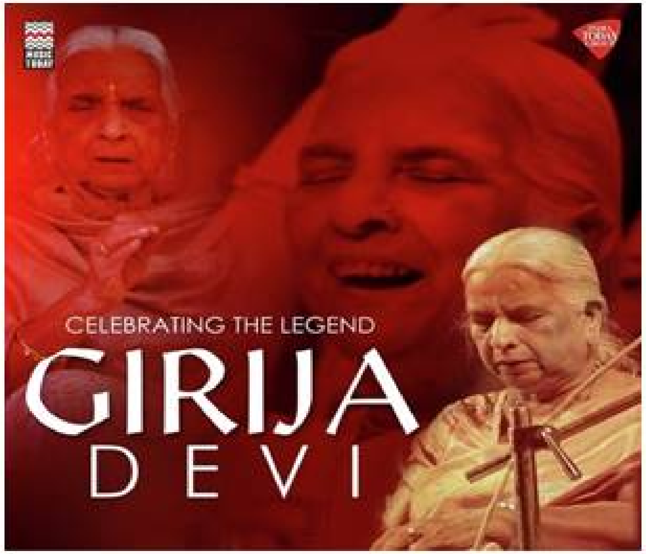

गिरिजा देवी (8 मई 1929 - 24 अक्टूबर 2017) सेनिया और बनारस घरानों की एक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायिका थीं। वे शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय संगीत का गायन करतीं थीं। ठुमरी गायन को परिष्कृत करने तथा इसे लोकप्रिय बनाने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। गिरिजा देवी को सन २०१६ में पद्‌ विभूषण एवं १९८९ में भारत सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। संगीत और संगीतकारों के न्यू ग्रोव शब्दकोश में कहा गया है कि गिरिजा देवी अपने गायन शैली में अर्द्ध शास्त्रीय गायन बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाने के क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ उसके शास्त्रीय प्रशिक्षण को जोड़ती है। गिरिजा देवी को ठुमरी की रानी के रूप में माना जाता है।वह 'अलंकार संगीत स्कूल' के संस्थापक,श्रीमती ममता भार्गव, जिनके भारतीय शास्त्रीय संगीत स्कूल ने सैकड़ों मील की दूरी से छात्रों को आकर्षित किया है,की गुरु मानी जाती है।

उत्तर प्रदेश के
प्रमुख
लोकनृत्य
एवं
लोकगीत

सोहर गीत

सोहर घर में सन्तान होने पर गाया जाने वाला मंगल गीत है। इसको संतान के जन्म और उससे संबंधित अवसरों जैसे सतमासा, इत्यादि अवसरों पर गाया जाता है। इन गीतों में संतान के जन्म, उससे सम्बन्धित कहानियों और उत्सवों के सुन्दर वर्णन मिलते हैं। राम जन्म और कृष्ण जन्म की सुंदर कथाएँ भी सोहरों में हैं। राम के जन्मदिन रामनवमी और कृष्ण के जन्मदिन कृष्णाष्टमी के अवसर पर भी भजन के साथ सोहर गाने की परम्परा है।

आल्हा गायन

आल्हा वीर रस की गाथा है। जिसे सुनकर रक्तशिरा हिलोरें मारने लगती है। हृदय का स्पंदन तीव्र हो जाए, मन में एक नई ऊर्जा एवं उत्साह उत्पन्न हो उठे, कुछ ऐसी ही वीर रस प्रधान रचना है आल्हा खंड । बारहवीं सदी में चंदेल राजा परमार के दरबारी कवि जगनिक ने इस लोक-काव्य की रचना की थी। उन्होंने परमार के सामंत व अतुल पराक्रमी आल्हा-ऊदल को नायक मानकर इस खंड काव्य की रचना की। इसमें दोनों भाइयों की वीरता तथा इनके द्वारा लड़ी गई 52 लड़ाईयों का रोमांचक वर्णन किया गया है। कुछ विद्वान आल्हा को युधिष्ठिर व ऊदल को भीम का अवतार मानते है। कारण कि इन्होंने युद्ध भूमि में जो रणकौशल दिखाया वह अतुलनीय था। आज भी आल्हा-ऊदल का वृतांत सुनकर कायर व्यक्ति भी उत्साह के वशीभूत हो अनेक साहसिक कार्य कर गुजरते हैं। इन दोनों भाइयों की अन्तिम लड़ाई पृथ्वीराज चौहान से हुई, जिसमें अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए इन्हें अमरत्व की प्राप्ति हुई।'आल्हा'के नाम से विख्यात इनकी अलौकिक व अतुलनीय यशगाथा को सम्पूर्ण उत्तर भारत में खूब प्रसिद्धि मिली।

क़व्वाली

क़व्वाली भारतीय उपमहाद्वीप में सूफ़ीवाद और सूफ़ी परंपरा के अंतर्गत भक्ति संगीत की एक धारा के रूप में उभर कर आई। इसका इतिहास 700 साल से भी ज्यादा पुराना है। वर्तमान में यह भारत पाकिस्तान एवं बांग्लादेश सहित बहुत से अन्य देशों में संगीत की एक लोकप्रिय विधा है।

सुगम संगीत भजन

भारतीय संगीत के मुख्य रूप से तीन भेद किये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत और लोक संगीत। भजन सुगम संगीत की एक शैली है। इसका आधार शास्त्रीय संगीत या लोक संगीत हो सकता है। इसको मंच पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है लेकिन मूल रूप से यह किसी देवी या देवता की प्रशंसा में गाया जाने वाला गीत है। सामान्य रूप से उपासना की सभी भारतीय पद्धतियों में इसका प्रयोग किया जाता है। भजन मंदिरों में भी गाए जाते हैं। हिंदी भजन, जो आम तौर पर हिन्दू अपने सर्वशक्तिमान को याद करते हैं या गाते हैं|

कजरी लोकगीत

कजरी पूर्वी उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध लोकगीत है। कजरी की उत्पत्ति मिर्जापुर में मानी जाती है। मिर्जापुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा के किनारे बसा जिला है। यह वर्षा ऋतु का लोकगीत है। इसे सावन के महीने में गाया जाता है। यह अर्ध-शास्त्रीय गायन की विधा के रूप में भी विकसित हुआ है और इसके गायन में बनारस घराने की ख़ास दख़ल है।

कजरी गीतों में वर्षा ऋतु का वर्णन विरह-वर्णन तथा राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन अधिकतर मिलता है। कजरी की प्रकृति क्षुद्र है। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता होती है। उत्तरप्रदेश एवं बनारस में कजरी गाने का प्रचार खूब पाया जाता है। ब्रज क्षेत्र के प्रमुख लोक गीत झूला, होरी रसिया हैं। झूला, सावन में व होरी, फाल्गुन में गाया जाता है|

ढेढिया नृत्य

ढेढिया नृत्य का प्रचलन द्वाबा क्षेत्र में है। राम के लंका विजय के पश्चात वापस आने पर स्वागत में किया जाता है। इसमें सिरपर छिद्रयुक्त मिट्टी के बर्तन में दीपक रखकर किया जाता है।

धोबिया

'धोबिया' लोक कला पूर्वांचल की प्रमुख लोक कला है। उत्तर-प्रदेश राज्य के भोजपुरी क्षेत्र के धोबी समाज में यह लोक कला 'सामूहिक लोक कला' के रूप में जाना जाता है। 'धोबिया' लोक कला के अंतर्गत धोबिया लोक गीत, धोबिया नाच, धोबिया नौटंकी, धोबिया वेश-भूषा, धोबिया लोक संगीत, धोबिया मिथक, धोबिया वाद्ययंत्र, धोबिया लोक संस्कृति, धोबिया साहित्य, धोबिया कहावतें और धोबिया लोकविश्वास इत्यादि लोक कलाओं का हिस्सा है। 'धोबिया' लोक कला भोजपुरी की प्रमुख लोक कला है। धोबिया नृत्य में लिल्ली घोड़ी का उपयोग किया जाता है। इस नृत्य में कलाकार लिल्ली घोड़ी पर सवार होकर विभिन्न मुद्राओं में मंच पर कूदते हैं जो दर्शकों को भाता है। धोबिया नृत्य कला में भाग लेने वाले कलाकार विशेष वेशभूषा धारण करते हैं। इसमें घाघरा, अधबहियां, पगड़ी और कसनहटी) शामिल है। इस नृत्य को सिर्फ पुरुष कलाकार ही करते हैं।

फरुआही लोकनृत्य

फरुआही एक लोकनृत्य है जो भोजपुरीभाषी क्षेत्रों के ग्रामीण भागों में प्रचलित है। फरुआही नृत्य करी वह लोक विधा है जिसमें नर्तक का अंग प्रत्यंग नाचता है और काफी श्रम साध्य होता है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र के ग्राम्यांचल में लंबे समय से चली आ रही फरुआही नृत्य शुद्ध रूप से भोजपुरी का प्रतिनिधित्व करता दिखता है। इस नृत्य में पैरबाजी, घुंघरू और वाद्य का अद्भुत संयोग दिखता है। इस विधा को देखने से लगता है कि इसका चलन वीरगाथा काल में सैनिकों के मनोरंजन को ध्यान में रखकर शुरू किया गया और आज भी वह जीवंत है। अपने गमछे से नर्तक कभी महिला का स्वांग करते हैं तो कभी कमर में बांधकर अपने नृत्य को गति देते हैं। बहरहाल गमछा इस नृत्य का प्रमुख हिस्सा है।

अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या

तुलसी स्मारक भवन
रतन विज्ञान केन्द्र, निकट विरला धर्मशाला, अयोध्या, 224123